राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 84 15 अप्रैल 2004

सदस्यता शुल्क : ——— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू	13
3.	आवश्यक सूचना	14
4.	मन के संस्कार (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	15
5.	अनमोल वचन	17
6.	ज्ञान-सार	17
7.	स्वास्थ्य स्तम्भ (औषधि प्रयोग)	18
8.	सत्संग सार	19
9.	सतगुरु कृपा	22

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग

भिवानी कैसेट क्रमांक..... 93

दिनांक 3.10.92

समय ..... सायं

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! जैसी भी मालिक की मौज होगी उतनी ड्यूटी मैं बजा दूंगा। यह सब उस मालिक राधास्वामी दयाल की दया है। न मैं पढ़ा लिखा हूं और न ही कुछ जानता हूं। मैंने तो एक राधास्वामी नाम ही जाना है। बस। आप लोगों को भी यही बताता हूं कि जिनको राधास्वामी नाम मिल गया, जिसे राधास्वामी का पता लग गया, बाकी और कुछ नहीं रह गया। बल्कि मुझे ऐसी बातें, ऐसे इतिहास याद आ जाते हैं। बताने वाली सतगुरू की दया होती है। वह राधास्वामी नाम जो अब बताता हूं, इसी नाम के ऊपर कबीर साहब का काल के साथ में मुकाबला हुआ था। स्वामी जी ने उस नाम की बड़ाई की है। वही नाम उस वक्त था और वही अब है। कबीर साहब के वक्त बड़ा भारी उपद्रव किया था। फिर भी कबीर महाराज ने कहा था कि जो मेरा नाम लेंगे और इस शब्द को पकड़ लेंगे वे कभी भी काल की चपेट में नहीं आयेंगे। काल महाराज ने बड़े ही चमत्कार दिखाए। कहते हैं कि कबीर साहब ने उसके दांत भी तोड़ दिए। ऐसा उनकी पुस्तकों में मैंने सुना है। पर दांत तोड़ने का यह मतलब नहीं है कि लठ से तोड़ दिए। आदमी जो काम करता है वह अपना काम पूरा कर जाए। एक बकवास करता है, वह बकवास ही करता रहे और काम करने वाला आगे निकल जाता

है तो उसके दांत आप ही टूट गए।

एक बार की बात है, भाई रतीराम और मैं एक महात्मा के पास चले गए। उस महात्मा की कोई बड़ी अच्छी शिष्या थी। महात्मा ने उससे कहा—देख भई! यह आया है। इनकी पुस्तकें हैं। उसने कहा, इसमें तो लिखा है कि—

ताराचन्द काल का सिर दिन्हा है फोड़।

आपने सिर कैसे फोड़ा? मैं तो नहीं बोला। पहले बदरी कवि ही बोल पड़ा। उसने कहा—जो उसकी हद से निकल जाता है उसका सिर ही फूट जाता है। मैंने रतीराम की तरफ इशारा कर दिया। इसने कहा—हमें तो बोलने की जरूरत ही नहीं पड़ी। इतनी देर में उस बहन ने कहा—महाराज जी! और भी कुछ लिखा है। उस महात्मा ने पूछा—वह क्या है? वह बोली, लिखा है कि—

मध्य सुषुम्ना तिल है ला देखो दुरबीन।

उसने पूछा—इसका क्या मतलब हुआ? मैंने कहा—बस! अब तो पता ही लग गया। उसने पूछा—क्या पता लग गया? मैंने कहा—जब आपको सुषम्ना का ही पता नहीं है, तो फिर आपने क्या करना है? आप क्या करोगे? उस पर वह कवि जी ही बोल पड़े कि आप तो महात्मा हो। शब्द बनाते हो और दूसरे साधन करते हो। क्या आप को यह भी पता नही है कि 'मध्य सुषुम्ना तिल है, ला देखो दुरबीन।' यह तो संतों की पहली सीढ़ी और पहली बात है।

सो जो कोई भी काम होता है, राधास्वामी दयाल दया कर देता है, वह आप ही पूरा कर देता है। हम जब अपने आप पर जिम्मेवारी लेते हैं, तो गिर जाते हैं। मैं जो दो तीन बातें आपको कहता हूं मेरी वे बातें आपको खारी लगती हैं। पर जब मैं चला जाऊंगा तब आप लोग मेरी बातों पर बड़ा अमल करोगे। मैंने तो बार—बार कहा है। मेरे सामने बोलने वाला हो तो आ जाओ। एक बात तो यह कहता हूं कि संत के घर में संत नहीं हो सकता। संत

रास्ता दूसरा है। संतान रास्ता दूसरा है। कहीं भी बातें करो। दूसरी बात है कि जितने भी संत हुए हैं सभी ने कमा कर खाया है। तीसरी बात यह है कि जब संत सतगुरू गद्दी पर आ जाता है और फिर भी बच्चे पैदा करता है, तो कभी भी उसे सतगुरू मत कहो। वह संत सतगुरू कहलवाने के काबिल नहीं रहता है। मैं सतगुरूओं की बातें कहता हूं। सतगुरू सतगुरू ही होता है। प्रमाण देता हूं। रामकष्ण परमहंस अपनी धर्म पत्नी को माता जी कहा करते थे। कबीर साहब सत्संगिन कहते थे और कोई कुछ कह देता है। चाहे कोई भी हो जब वे इस मंजिल पर चढ़ जाते हैं, उनका नाता बदल जाता है। आप किसी का प्रमाण मेरे सामने लाओ। मैं बता दूंगा कि एक तो संत सतगुरू का प्रमाण न्यारा ही रहता है। संत सतगुरू जब आते हैं तो वे उस दायरे से बाहर निकल जाते हैं।

उनको विद्या की भी जरूरत नहीं होती है। उन्हें तो अपने काम की ही जरूरत होती है। यही हमारा सब से बड़ा धर्म है। दूसरी बात यह है कि जो निष्पक्ष आदमी हैं वे मेरी बात को समझ जाएंगे और उसे लागू कर लेंगे। मेरी एक बात यह भी है कि मैं आपके पास आकर बैठा हूं। यदि मैं कहता हूं कि मैं तो राधास्वामी धाम से आया हूं और काल भी मेरी मुट्ठी में हैं। मैं काल के ऊपर हुक्म चलाता हूं और हम सत्संगी काल से नहीं डरते लेकिन मैं दुनिया के लठों से डरता हूं। तो बताओ, काल को काबू में कैसे कर लिया? ये बातें मेरी समझ से बाहर हैं। मैं क्या कहूं? मेरी प्रारब्ध ही निकम्मी होगी। मेरे सामने अब तक कोई महात्मा बनकर नहीं आया जो कोई मुझ से पूछ ले और मैं उससे भी पूछ लूं। कोई बताता नहीं है। अगर कोई चोर हो तो वह क्या बताएगा? मैं तो दावे के साथ कह देता हूं। मैं सीधा आदमी हूं। मैं कोई संत भी नहीं हूं। मैं तो अपने गुरू की ड्यूटी बजाता हूं। मैं संतों की बात कहता हूं। न मैं पीर हूं, न मैं राम हूं और न मैं खुदा हूं। मैं तो आप

लोगों का सेवक हूं। जितनी मुझसे सेवा होती है, वह कर देता हूं। ये बातें मेरे दिमाग में नहीं जंचती हैं, क्यों—

आंधी दुनिया, मोधू ज्ञान, लांडा भूत करे घमसान।

दुनिया तो अंधी हुई चली जा रही है। कह देते हैं कि यह भी पगला है। दो प्रेमी आदमी आश्रम में आए हुए थे कहने लगे—देखो! जहां सच्चाई होती है वहां कोई भी नहीं आता है। कल कितने ही सच्चे, धर्म के मानने वाले लोग बैठे थे। वहां दुनिया नहीं आई। मैंने कहा—आप ने गलत बातें कहीं। सच्चाई जहां होती है वहां तो आप ही आ जाते हैं। वहां कुछ न कुछ धोखा था। सच्चाई नहीं थी। सच्चाई जहां होती है, वहां तो दस—दस बीस—बीस लाख भी इकट्ठे हो जाते हैं। जब सच्चाई होती है तभी जाते हैं। जहां पुलिस पहरा देती है, वहां सत्संग खत्म हो जाता है। पता नहीं मेरी प्रारब्ध में क्या लिखा है और आगे क्या बनेगा? सत्संगियों का तो अपना पहरा होता है। सेवादार होते हैं। ये सब तो सत्संगियों का ही काम होता है। मेरे साथ क्या होना लिखा है वह तो मालिक ही जानता है। कभी ऐसी बातें मैं कहता हूं और मुझे भी दुख उठाना पड़ जाएं। कहना नहीं चाहिए। पर सच्चाई जहां होगी वहां आदमी तो जरूर ही आयेंगे। सच्चाई के ग्राहक आएंगे। काफी आदमी तो कह देते हैं कि वे ही सच्चाई के ठेकेदार हैं पर धोखा भी होता है। मैंने कहा ऐसी बात नहीं थी। सच्चाई होती है वहां तो आदमी आ ही जाते हैं। सच्चाई को ही देखकर आते हैं। जहां कहीं झूठ निकल आती है तो वहां आना बंद कर देते हैं।

सो प्रेमियो! अपना काम करना है। मैं नहीं कहता कि तुम राधास्वामी मत के बन जाओ या तुम सनातनी मत बनो या और धर्म छोड़ दो। नहीं, मैं ऐसा अन्याय नहीं करता। काफी आदमी तो मुर्गियों की तरह से पिटारी में रोक लेते हैं। वे उन्हें दूसरी पिटारी में जाने से रोकते हैं। मैं पिटारी में रोकने के लिए नहीं आया न मेरे

गुरू महाराज ने रोका और न मैं किसी को रोकता हूं। एक दिन मास्टर जी ने मुझसे कहा—आप कह देते हो कि 8—9 लाख सत्संगी हैं। मैंने कहा—मुझे क्या पता? उसने कहा—मैं इसका हिसाब लगाऊंगा। उसने हिसाब लगाया तो 8 लाख से 3—4 हजार ज्यादा मिले। उसने पूछा—आपको क्या पता? मैंने कहा—मैं तो कुदरती ही कह देता हूं। मुझे तो पता नहीं है। मैं सच कहता हूं—मैं जानता भी नहीं हूं। मैं तो सीधा राम—नाम को जानने वाला आदमी हूं। मैंने तो अपने सतगुरू की सेवा की थी और अब भी उन्हीं की सेवा करता हूं। मेरे पास यदि कोई शास्त्रार्थ का दावा करके आता है तो मैं कह देता हूं कि पहले अपने आपको सुधार ले फिर शास्त्रार्थ करना। अपनी कमी को दूर कर लो बाद में शास्त्रार्थ कर लेना। मैं तो शास्त्रार्थ नहीं जानता। कई लोग आश्रमों में रहने वाले हैं। कई आश्रम में ध्यान में बिठाते हैं। मैं तो अपने आश्रम में किसी को ध्यान में नहीं बिठाता। वे कईयों से कहते हैं कि उठो और ध्यान में बैठो। आश्रम में काफी सत्संगी रहते हैं। क्या मैंने किसी को उठने को कहा है? कभी नहीं। मेरा एक नेम जरूर है। मैं सब को बैटरी से देखता हूं। मैं यह देख लेता हूं कि कौन क्या कर रहा है। एक बार भी देख लूं और दो बार भी संभाल लूं। पर मैं किसी को नहीं कहता कि तुम ध्यान में बैठो। मैं क्यों कहूं? मुझे क्या मतलब है? अपनी—अपनी आत्मा का आप ही फिक्र करना चाहिए। मुझे तो अपनी ही आत्मा का फिक्र था। आप प्रश्न करते हो कि अपनी औलाद को संभालना अच्छी बात है। हां, उस औलाद को संभालो जिस में जहर भरा हो। मेरी औलाद में जहर नहीं है। न मैं किसी को बंधन में डालता। कहीं आओ और कहीं जाओ। किसी का सत्संग सुनो। क्या मैंने किसी से कभी कहा कि दूसरों के सत्संग में मत जाना। अरे ! दूसरे के सत्संग में जाने से कुछ न कुछ मिलता है। जो दूसरों के सत्संग सुनने से रोकते

हैं उनके अंदर चोर है।

एक बार की बात है। चौ० इन्द्राज बादली वाले आए हुए थे। कई महंत उनके पास बैठे थे। उन्हीं का चेला हृदयदास कोई पुस्तक पढ़ रहा था। उन्होंने कहा—तुम्हारी किताब में तो भूंड है। उसने सोचा कि यह क्या बात कह दी। वह उनसे जाकर मिला और पूछा कि आपने भूंड किस तरह बता दिया? उन्होंने कहा—भूंड है ही, तुम सारे ही किताबों के चोर हो। तुम्हें असलियत का पता नहीं है। बाहर के ध्यानी बन गए। अन्तर के ध्यानी नहीं बने। चौ0 इन्द्रराज को दोनों तरह का ध्यान था, बाहर का भी और अंतर का भी। पर उनके शिष्यों को बाहर का ही ध्यान सिखाया। वे बाहर के ही ध्यानी बन गए और सभी गिरावट में आ गए। वह पंथ ही खत्म हो गया। संत सतगुरू जब आते हैं, तो वे दोनों तरफ का ध्यान लेकर आते हैं। जो धुर से आते हैं वे दोनों ही ध्यान, बाहर और अंतर का बताते हैं। जो दोनों ध्यान नहीं बताता है, उसे सतगुरू नहीं कहा जाता है। उसको गुरू कह सकते हो। सतगुरू तो दोनों ही ध्यान बताता है। बाहर—भीतर दोनों का इशारा किया है। पर एक शब्द को लेकर कई लोग तो बाहर चले जाते हैं और एक ही शब्द लेकर अलहदा और ही कुछ बना लेते हैं। स्वामी जी महाराज ने ''सार बचन'' में एक ही शब्द कहा है—

खोलो आंख निकट ही देखो, राधास्वामी खूब कही।

आंख खोल करके देखो, ऐसा कहा है। अब खुली आंखों वालों ने तो इसी शब्द को ले लिया। पर स्वामी जी की और वाणी को कोई भी नहीं लेते। बस इस एक को ही पकड़ लिया। इसी तरह का एक शब्द कबीर साहब ने भी कहा है—

आंख न मूंदूं, कान न रूंधूं, काया कष्ट न धारूं।
खुली आंखों हंस—हंस देखूं, सुन्दर रूप निहारूं।।

ये कली तो उन्होंने पूरी ले ली। दूसरी कली तो नहीं पकड़ी।

बस इस बात पर गिरावट आ जाती है। उनमें फिर क्या आया? उन्होंने एक कली और भी तो कही है—

शब्द निरंतर मनुवा राचा, मलिन वासना त्यागी।
सोवत जागत, उठत बैठत ऐसी रटना लागी।।

जब मलिन वासना छुट जाती है तो आर्य बन जाता है। जब मलिन वासना रह जाती है तो सारे मजहबों में ही मलिनता है। हमारे सत्संगियों में भी तो मलिन वासना भरी पड़ी है। एक सत्संगी को देखकर दूसरा जल जाता है। इसीलिए मैं कहता हूं कि तुम अभी सत्संगी नहीं बने हो। मलिन वासना जब दूर हट जाती है तब शब्द में मनुवा लटपट हो जाता है।

शब्द निरंतर मनुवा राचा, मलिन वासना त्यागी।

जब मलिन वासना त्याग दी जाती है तो वह शब्द में मिल जाता है। बड़ी शांति आ जाती है। ब्रह्मनेष्ठा महात्मा को ब्रह्म ही ब्रह्म दिखाई देता है। जो शब्द में लटपट हो जाता है उसे तो शब्द ही शब्द दिखाई देता है। या यूं कहो कि उसे गुरू ही गुरू दिखाई देता है पर यह करणी का मार्ग है। बातों का मार्ग नहीं। करणी करोगे तो तिर जाओगे। मैंने बातें नहीं सीखी। मैंने तो काम किया था। अपने सतगुरू से नाम लेकर काम किया। आज उस का फल मुझे मिला। पर मैं उसका दुख भी भोग रहा हूं। सोचो! मुझे एक सैकिण्ड का भी आराम नहीं है। कोई भी शांति नहीं है। शांति तो बस एक है कि मैं अपने गुरू की ड्यूटी बजा रहा हूं। मैं अपने सतगुरू के हुक्म पर हूं। उनकी दया में अगर तकलीफ भी हो, तो तकलीफ न मानो।

ऐ सत्संगियो ! अगर तुम ध्यान में बैठते हुए दुख पाते हो, तो दुख मत माना करो। ये सोचा करो कि यह मेरे गुरू की ड्यूटी है। मुझे एक घंटा आधा घंटा ध्यान में बैठना है। जो घंटा आधा घंटा ध्यान में नहीं बैठते वे सब गुरू के चोर हैं। गुरू करने से नहीं

तिरोगे। यह तो कोरा धोखा है। गुरू ने जो मार्ग (रास्ता) बताया है उस पर काम करोगे, तो तिर जाओगे। इस राधास्वामी मत में भी चोर आ गए। यह भी गिरावट में आता जा रहा है क्योंकि वह उससे झगड़ता है और वह उससे झगड़ता है। झगड़े चलते हैं। भजन में तो बैठते नहीं। केवल विरोध करते हैं। अगर तुम निभा करके भजन में बैठ जाओ तो तुम्हारा गुरू से प्यार जुड़ेगा। तुम्हें शांति मिलेगी। निभा कर बैठो। अगर तुम्हें आनन्द नहीं आता तो भी कोई बात नहीं। नेम टेम से बैठा करो। टाइम आगे पीछे भी हो जाए तो कोई बात नहीं। पर अपना टाइम निकाला करो। हाजरी तो लगती है। जब हाजरी लग जाएगी तो तनख्वाह भी जरूर मिलेगी। सो तनख्वहा लेना चाहते हो हाजरी लगाया करो। अगर गुरू—गुरू ही करते रहे, तो नहीं तिरोगे। गुरू—गुरू करते रहे और अंतर में तुम्हारे धोखा भरा पड़ा है, तो क्या गुरू तार देगा? गुरू नहीं तारेगा। तब कौन तारेगा? गुरू की शिक्षा तारेगी। गुरू के नेम पर चलो तो तिर जाओगे। सो दोनों वक्त ध्यान में जरूर ही बैठा करो। मैं भी बता देता हूं कि जब तुम सत्संग में आते हो तब गुरू के दर्शन होते हैं और हम सेवा करते हैं। हमारा ध्यान यही होता है कि दर्शन हो जाए। मैं इस बात को बुरा नहीं कहता। बहुत ही अच्छा कहता हूं। गुरू के दर्शनों से कोटि जन्मों के पाप कट जाते हैं।

दर्शन कीजे गुरां के, दिन में कई—कई बार।
आसौजों के मींह ज्यों, बहुत करैं उपकार।।
संतों के दर्शन से आई टलै बला।
जो दण्ड सूली का कांटे में टल जा।।

मैं इस बात को मानता हूं। फिर भी मैं कहता हूं कि ध्यान में भी बैठा करो। मेरी बात किसी को बुरी लगे तो लगती रहे। मैं तो हिसाब की बातें कहा करता हूं। मैंने तो अपने सतगुरू से यही बातें

की कि मुझे उसकी ही जरूरत है, जिससे अपने घर चला जाऊं। उस रास्ते की जरूरत है। उन्होंने जो मुझे बताया उसका आप लोगों को पता है। आगे तुम्हारी मर्जी है। सेवा तो तुम हमारे बराबर की करते हो। यह मेरी सेवा है। यह सारी ही संगत की सेवा है। इससे पाप कट जाते हैं और सेवा से बड़ा आनन्द मिलता है।

मोटे बंधन जगत के गुरू भक्ति से काट।
झीने बंधन जगत के कटैं नाम प्रताप।।
मोटे जब तक जाएं नहीं झीने कैसे जांय।
तांते सब को चाहिए, नित गुरू भक्ति कमांय।।

जो सेवा करते हैं और फिर यह भी सोचते हैं कि मैं तो बहुत बड़ा आदमी हूं। क्या अब कूंडी उठाऊंगा? तो समझ लो अभी अहंकार है। अभी अहंकार निकला नहीं है। अंतर उजला और साफ नहीं हुआ है। जब अहंकार निकल जाता है तो जीवन सफल हो जाता है। सारा काम उसका बन जाता है।

मैंने तो इन महात्माओं के बहुत पांव धोए हैं। इनके बंगले बहुत धोए हैं। क्या कहूं ऐसे—ऐसे काम किए हैं कि कुछ कह भी नहीं सकता। मैं ये सोचा करता था कि सतगुरू की अपार दया है। इनके दर्शनों से कर्म कट जाते हैं। तुम्हें भी यही कहता हूं कि जिनके सत्संग में तुम जाते हो उनकी रेडीएशन काम करती है।

मैंने दो तीन बातें कही हैं। मेरी बातों का बुरा न मान जाना। मैं सीधा आदमी हूं और सीधी बातें कह देता हूं। मेरे वश की बात नहीं है। हम ठेकेदार बन जाते हैं। पहले बाप था, फिर बेटा बन गया। फिर पौता और उसके बाद पड़पोता आ जाता है। इसके बाद सड़पौता आता है। इस तरह हम उनको अपनी जायदाद के मालिक बना जाते हैं। दुनिया पागल हो जाती है। समझते नहीं। असलियत असलियत होती है। इसीलिए शराब, मांस, भैड़े कर्मों से बचने की कोशिश करनी चाहिए। जिस मजहब में शराब का और

मांस का नेम नहीं है तो उस मजहब में कभी भी मत जाओ। अगर वह राम के दर्शन करवाता है तो भी उसके पास मत जाओ। वह तो बना बनाया राक्षस है। पहले तो शराब और मांस का ही नेम होना चाहिए। फिर सारे ही नेम आप ही आप हो जाएंगे। यही सबसे बड़े पाप हैं। सीधे शब्दों में शराब, कबाब और शबाब। इन तीनों से बच ही जाओगे। ये विघ्न कौन करता है? विघ्न तो शराब ही करती है। सो तुम जिन महात्माओं के पास जाते हो, मैं बार—बार यही शिक्षा देता हूं उन की शिक्षा ग्रहण करोगे तो जी जाओगे। नहीं तो तुम्हारी मर्जी है। मैंने तो इन बातों को ग्रहण किया था। मैं बोलना तो कुछ और चाहता था और बोल कुछ और गया। एक बात आप लोगों को यह कही है कि अगर तुम मानोगे तो, अपना काम किया करो और नेम का पालन किया करो, बस। नेम का पालन करने वाला कभी भी किसी से घबराता नहीं है। चोर की दाढ़ी में तिनका देख लो। वह चोर घबराता है। बेधड़क आदमी घबराता नही है। जिस वक्त महाराज जी मौजूद थे उस वक्त की बात है।

एक प्रेमी उनके पास चला गया। उसने कहा—मैं राम के दर्शन यूं—यूं करवा दूं। उस वक्त कवि बदरी वहां गया हुआ था। उसने बदरी कवि से कहा कि ताराचन्द का गुरू तो कुछ भी नहीं जानता है। मैं जानता हूं। महाराज जी मुझसे बोले कि यह क्या बुला लिया? मैंने उसको और बदरी को भी बुला लिया और हम गुरू महाराज जी के पास में बैठ गए। मैंने उससे कहा—क्या मैं एक बात पूछ लूं? उसने कहा—पूछ ले। मैंने कहा—अगर तूने सच नहीं बोला तो तेरे शरीर में कुष्ट हो जाएगा। मैं बुरी बात भी कह दिया करता हूं। मैंने कहा—क्या तूने अंतर में प्रकाश देखा है कभी? उसने कहा—नहीं। मैंने पूछा—क्या तूने कभी शब्द की धुनि सुनी है? उसने कहा—नहीं। मैंने कहा—फिर तू मेरे गुरू महाराज को

क्या कहता है? अरे बेशर्म ! तू कपड़े उतारे बैठा है और तेरी गठड़ी में चार कुर्ते रखे हैं और फिर भी तू कपड़े मांगता है। तुझे औलाद है नहीं। तू अपने भाई के लड़कों को कपड़े देता है। तू तो दुखी होकर मरेगा। सो उसे हाथ जोड़ने पड़े। बदरी कवि ने कहा—वाह! उसकी वही दशा हुई। उसकी एक लड़की ने सेवा कर दी। नहीं तो कोई उसकी सेवा करने वाला भी नहीं था। कोई—कोई ऐसा भी आ जाता है। वह चेली बनाया करता था। उसकी आखरी टाइम में वह सेवा कर गई। बड़ा भारी जुल्म कर देते हैं। बाहर की आंखें खोलकर कुछ दिखा दिया। अरे! यह नहीं पता है कि—

बाहर की जो आंख देखती, सारा झगड़ा झूठा है।
अंतर की आंखों से देखो, घट में खेल अनूठा है।।
मन माया की फिरै दुहाई, पांच पचीसों ने लूटा है।
ताराचन्द भव पार उतर गया, सतगुरू सिर पर खूंटा है।।

कबीर साहब ने कहा है—

आंख कान मुख बंद कराओ, तब देखो गुलजारा है।
कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।।

नानक साहब सीधा कहते हैं—

सुमरन में सुरत लगाय के, मुख से कछु न बोल।
बाहर के पट देय के, अंतर के पट खोल।।
तीनों बंद लगाये के, सुनो अनहद टंकोर।
नानक सुन्न समाधि में नहीं सांझ नहीं भोर।।

नानक साहब जी ने भी बंद बताए हैं और भी बताते हैं—

चश्म बंद ओ गोश बंद और लव बिबंद।
गर न बीनी सररे हक बर मन बखंद।।

उन्होंने भी ये तीन ही बंद बताए हैं।

संत मत में ये तीनों बंद क्यों लगाये जाते हैं? ये तीनों इंद्रियां सब से पहले आती हैं। इन तीनों को ही काबू में करना सब से जरूरी है। ये कौन—कौन सी हैं? ये हैं जुबान, कान, आंख। इनमें

अगर कोई दो चीजों को भी काबू में कर ले, तो वह भी भागी है। जिसने अपनी अकेली इंद्री जुबान को वश में कर लिया है वह भी जीत जाता है।

जीभ जुल्म का जोर है, काम देव बढ़ जाता है।

जो खाने पीने का मजा लेता है, वह गिर जाता है। वह कभी भी महात्मा नहीं बना और न बन सकता है। सो सब से पहले जीभ का आनन्द छोड़ो। फिर और आनन्द आप ही ढ़ीले पड़ जाएंगे। शांति आ जाएगी। उसके लिए घण्टा–आधा घण्टा भजन सुमिरण करो, जैसा कि मैं पहले बता चुका।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

अप्रेल/मई मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	**कोसली**	**26 अप्रेल-02 मई**
2	**लालपुर**	**03 - 09 मई**
3	**चौबारा**	**10 - 16 मई**
4	**थिरपाली**	**17 - 23 मई**

आवश्यक सूचना

सभी सत्संगियों की जानकारी के लिए यह प्रसारित किया जाता है कि बड़े महाराज जी (पूज्य परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज) ने अपने जीवन काल में ही 'राधास्वामी सत्संग ट्रस्ट (दिनोद), भिवानी' के नाम से एक ट्रस्ट की स्थापना की थी।

उन्हीं के उत्तराधिकारी हुजूर कंवर सिंह जी सत्संगों द्वारा उनका उद्देश्य आगे बढ़ा रहे हैं। परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज ने इनके अलावा किसी को अधिकृत नहीं किया था।

लेकिन कुछ अवांछित व्यक्ति अपने स्वार्थवश अपना अलग सत्संग चलाकर हुजूर परम सन्त ताराचन्द जी महाराज के नाम के साथ जोड़ रहे हैं जो कि एक दण्डनीय अपराध है।

अतः सभी सत्संगियों से अनुरोध है कि वे उन अवांछित व्यक्तियों के नाम तथा वे प्रमाण जिनके आधार पर वे स्वयं को हुजूर परम सन्त ताराचन्द जी महाराज से जोड़े हुए हैं, ट्रस्ट कार्यालय में भेजें ताकि दस्तावेजों के आधार पर उनसे कानूनी कार्यवाही की जा सके।

सचिव
राधास्वामी सत्संग दिनोद
भिवानी (हरियाणा)

सूचना

राधास्वामी सत्संग दिनोद (भिवानी) आश्रम का टेलीफोन नं. बदल गया हैं। नया नं. इस प्रकार है- **01664 – 265094**

मन के संस्कार

महर्षि शिवव्रत लाल जी

हृदय एक बर्तन है, जिसमें संकल्प-विकल्प का पानी भरा हुआ है। जिसके जैसे ख्याल होते हैं, वैसे ही ख्याल वह दूसरों को दिया करता है और उसी प्रकार के ख्याल वह औरों से लेकर भरा करता है। शहद के मटके से शहद दिया जाता है और शहद ही उसमें भरा जाता है। तेल के मटके से तेल दिया जाता है और तेल ही उसमें भरा जाता है। यदि शहद के मटके में तेल और तेल के मटके में शहद भरा जायेगा तो बिगड़ जायेगा। इसलिए जब किसी वस्तु के मटके में दूसरी वस्तु भरनी हो तो पहले उसे खाली करो फिर साफ करो। फिर जब भरोगे उस समय वह वस्तु न बिगड़ेगी।

बुरे दिल से पहले बुराई को निकालो, फिर साफ करो। फिर उसमें भलाई को भरो। यदि बिना खाली और साफ किये भरोगे तो भयानक स्थिति हो जायेगी। खाली करके फिर साफ करने की भी आवश्यकता है। क्योंकि बर्तन ने पहली वस्तु के प्रभाव को अपना अंग बना रखा है और वह प्रभाव नई वस्तु को बिगाड़े बिना न रहेगा। इस प्रभाव का नाम संस्कार है। जब तक संस्कार नहीं बदला जाता, तब तक उच्चतर दशा नहीं होती।

मन को पवित्र करने और उसके प्राचीन संस्कारों को दूर करने का उपाय यह है कि स्वाध्याय अर्थात् सद्ग्रन्थों के पढ़ने से, शिक्षाओं को सुनने से, सोच-विचार करने से और असलियत में मन लगाने से उसमें शुद्धता आती जायेगी।

यह काम तुमको स्वयं करना पड़ेगा। इसके बिना किए हुए तुम्हारे लिए बचाव का कोई उपाय नहीं है। यह काम पहले करो और अपने आप ही करो। बुद्धि मिली है। विवेक प्राप्त है। सोचने-समझने के सामान प्राप्त हैं। यही मन रूपी बर्तन के माँजने के मसाले हैं। इसके अतिरिक्त और मसाला नहीं है। जब वह अच्छी तरह शुद्ध हो जायेगा तब प्रसन्नतापूर्वक जो अच्छी वस्तु इसमें रखोगे वह न बिगड़ेगी न नष्ट होगी।

त्याग के आदर्श

समुद्र तटकी दीवार पर एक सज्जन बैठे थे। उन्होंने देखा कि एक जवान आदमी हाथ में धोती-लोटा लिए आया। उसने धोती-लोटा किनारे पर रख दिया और कपड़े उतारकर स्नान के लिए समुन्द्र में घुस गया। इतने में समुन्द्र की एक बड़ी लहर आयी और उसको अपने साथ ले गई। धोती-लोटा किनारें पड़ा रह गया और वह आदमी फिर समुद्र से बाहर नहीं आया। दीवार पर बैठे सज्जन यह सब देख रहे थे। उनको जीवन की क्षण भंगुरता का साक्षात्कार हो गया था। वे भी दीवार से उतरकर अज्ञात स्थान की ओर चल दिये और भगवान् के भजन में लग गये। फिर कभी लौटकर घर नहीं गये।

त्याग में विचार कैसा? कोई मरता है तो क्या विचार करके मरता है।

अनमोल वचन

- मुक्ति का द्वार राई के बीज के दसवें भाग के समान बारीक है और मन हाथी की भाँति मोटा है। यदि सतगुरु पूरा मिल जाये, वह हम पर कपा करे तो हम आसानी से अपने स्थान सचखण्ड को जा सकते हैं। — *कबीर साहिब*
- अगर तुम अपने पंथ, मजहब और रास्ते का फिक्र करते हो और अपने जीवन का भला चाहते हो तो नेम-टेम से सुमरन-भजन किया करो। — *परमसन्त ताराचन्द जी महाराज*
- जहाँ से भी प्राप्त हो शुभ विचार ग्रहण करके उन्हें पक्के करके अपने पथ प्रदर्शक बना लोगे तो जीवन का कल्याण निश्चित हो जायेगा। — *सन्त कंवर सिंह जी महाराज*
- यह मनुष्य जन्म परमात्मा द्वारा दिया गया एक दुर्लभ अवसर है, यह इस विकराल भवसागर को पार करने के लिए प्रदान की गई नौका है। — *सन्त तुलसी साहिब*

ज्ञान-सार

- चाहे साधु बनो, चाहे गहस्थ बनों, जब तक कामना (कुछ पाने की इच्छा) रहेगी, तब तक शान्ति नहीं मिल सकती।
- कामनापूर्वक किया गया सब कार्य असत् है, उसका फल नाशवान होगा।
- जब तक शरीर को अपना मानते रहेंगे, तब तक हमारी कामना नहीं मिट सकती।
- कल्याण-प्राप्ति में खुद की लगन काम आती है। खुद की लगन न हो तो गुरु क्या करेगा? शास्त्र क्या करेगा?
- जगत, जीव और परमात्मा इन तीनों को न जानना, अन्धकार है। जो इस अन्धकार को मिटा दे, वह गुरु है।

मधुमेह (DIABETES)

मधुमेह में बेलपत्र का स्वरस :

1. प्रतिदिन 5 बेल के पत्ते 21 श्यामा तुलसी के पत्ते, 7 नीम के पत्ते, 11 काली मिर्च, चारों को सिल पर घोट–पीसकर एक कटोरी जल के साथ लेने और प्रतिदिन 3 किलोमीटर घूमना चाहिए। चावल व मिठाई का परहेज करना चाहिए।

2. बेल के 7 हरे पत्ते, 7 काली मिर्च तथा 7 बादामगिरी (पानी में भिगो कर रखी हुई) को बारीक पीसकर 100 ग्राम पानी में मिलाकर दिन में दो बार पीने से बहुत ही जल्दी रक्त में शर्करा की मात्रा घट जाती है।

3. एक काँच के गिलास में 5 बेल के पत्ते, 5 तुलसी के पत्ते, 5 नीम के पत्ते तथा 6 ग्राम विजयसार की लकड़ी को रात में पानी में भिगो दे। प्रातः छानकर इस पानी का नियमित प्रयोग करते रहे। खादी भण्डार से प्राप्य 'विजयसार की लकड़ी के गिलास' में रात में पानी रखकर सुबह इस पानी को पीने से भी कई रोगियों को मधुमेह में लाभ होता है।

मधुमेह में तुलसी की पत्तियाँ

4 ग्राम तुलसी के पत्ते लेकर उन्हें अच्छी तरह धोने के बाद 150 मि.ली. पानी में उन्हें उबाले। इस पानी को महीन कपड़े से छान लें, और उसमें 100 मि.ली. दूध और 4 चम्मच गुड़ की राब मिलाकर अच्छी तरह हिलाऐं, फिर लें। तुलसी कीटनाशक होने से सर्दी, खांसी, दमा आदि में भी यह काढ़ा गुणकारी है।

पुस्तक "स्वदेशी चिकित्सा सार" -डा. अजीत मेहता "आयुर्वेद रत्न"

हुजूर महाराज जी के सत्संग का सार

रोहतक

8. 2. 2003

जिस प्रकार बच्चे अपने ही चारों तरफ चक्कर काटते–काटते जमीन पर गिर पड़ते हैं, तो वे अपनी सारी शक्ति को भी खो चुके होते हैं और उनको आसमान अपने नीचे और पथ्वी ऊपर घूमती हुई दिखाई देती है। वास्तव में न ही तो उनकी शक्ति कहीं जाती है और न ही उस तरह जमीन और

आसमान ही घूमते हैं। यह तो उनको भ्रम हो जाता है। इसी प्रकार से यह जीव भी असहाय होकर दुख में अपनी सहायता के लिए इस सष्टि के रचयिता कुलमालिक को पहाड़ों, जंगलों, नदियों, तीर्थों, मन्दिरों, मस्जिदों में कहीं भी छुपकर बैठा समझकर उसको जगह–जगह ढूँढने की कोशिश करता है, जबकि वह कुलमालिक स्वयं उसके अन्तर में है। जीव को यह भ्रम भी उन बच्चों की तरह से उनके लखचौरासी में गिरकर चक्कर काटने के कारण ही हो जाता है। जीव की इस स्थिति को देखकर ही कबीर साहब ने कहा है कि–

जल बीच, मीन पियासी। मोये सुन-सुन आवे हाँसी।।

कुल मालिक की वह शक्ति जीव में इसी प्रकार छुपी हुई है

जैसे मेहन्दी में लाली, तिल में तेल और लकड़ी में आग छुपी होती है। मेंहदी, तिल और लकड़ी को रगड़कर ही इनमें इनकी लाली, तेल और आग को प्राप्त किया जा सकता है।

जीव अपने अन्तर की शक्ति को अपनी दसों इन्द्रियों के द्वारों से नष्ट कर रहा है। वह अपनी उस शक्ति को अपने मन के अन्दर रखकर अपने शरीर को रगड़ने और मथने का यह काम अपने मन से सतगुरु के बख्शे वर्णात्मक नाम की तरंगों को उनकी बताई गई विधि अनुसार अपने अन्तर की धुनात्मक नाम की तरंगों से जोड़कर वह उस कुलमालिक को अपने अन्दर प्रकट कर सकता है। ऐसा करके जीव में अपनी इच्छा मत्यु को प्राप्त करने की शक्ति आ जाती है। तब उसको अपने बुढ़ापे में एक–एक गिलास पानी के लिए किसी के आगे गिड़गिड़ाने की जरूरत नहीं पड़ती, बल्कि वह अपने साधारण इशारे मात्र से अथवा किसी को कहकर अपने सब काम करवा सकता है।

जीव पुस्तकों पर या लोगों पर विश्वास करके संसार की बनावटी धुन तरंगों पर आधारित रेडियो, टी.वी. या मोबाइल फोन बनाकर हजारों लाखों कि.मी. दूर पर बैठे अपने किसी रिश्तेदार से तो बात कर लेता है, पर अपने अन्तर की वर्णात्मक ध्वनि तरंगों को कुलमालिक की धुनात्मक तरंगों से जोड़कर उसकी शक्ति को अथवा अपने उसके गुप्त खजाने को प्राप्त नहीं करता है। इसका कारण तो यही है कि वह न ही तो अपने सतगुरु पर ही विश्वास करता है, न ही इन्द्रियों के द्वारों से संसार में अपनी शक्ति को नष्ट होने से ही रोकता है। यदि वह ऐसा कर ले तो संसारी सुखों के रुचिकर खेल से हजारों गुणा सुखदाई और शक्ति देने वाले

खेल को अपने अन्तर में ही प्राप्त कर ले। संसारी तरंगें तो अन्तर की तरंगों की नकल मात्र और बनावटी हैं पर अन्तर की ध्वनि तरंगें तो कुदरती और बेहद शक्तिशाली हैं। इसीलिए ही तो बड़े महाराज जी हमेशा यही कहा करते थे कि–

बाहर की जो आँख देखती, सारा झगड़ा झूठा है।
अन्तर की आँखों से देखो, घट में खेल अनूठा है।।
मन-माया की फिरे दुहाई, पाँच-पचीसों ने लूटा है।
ताराचन्द भव सागर तिरगे, सतगुरु सिर पर खूँटा है।।

निस्सन्देह अन्तर के मन्थन का यह कार्य सन्त सतगुरु की कपा के बिना तो नहीं हो सकता है। फिर ऐसा भी नहीं है कि सन्त किसी ऐरे, गैरे, नत्थू खैरे को अपनी कपा की बख्शीश कर दें। यह कार्य तो तभी हो सकता है, जब शिष्य पूरी तरह से संगत या मानवता के प्रति समर्पित हो जाए अथवा अपने सन्त सतगुरु के वचनों के अनुसार चलकर वह संगत की सेवा सुश्रुषा करके और सत्संगियों को प्यार–प्रेम करके अपने सतगुरु को खुश कर ले।

हुजूर महाराज जी ने इसके साथ ही यह भी फर्मा दिया कि जीव को इस सेवा या प्यार–प्रेम करने की शिक्षा का प्रशिक्षण तो अपने घर पर ही प्राप्त होता है। जो सत्संगी अपने घर पर बूढ़े माँ–बाप, बुजुर्ग की सेवा, प्यार और इज्जत नहीं कर सकते हैं तो वे किसी गुरु पीर व संगत को भी सेवा व इज्जत नहीं दे सकते हैं। इसके विपरीत जो सत्संगी अपने घर पर अपने बुजुर्गों की सेवा व इज्जत करते हैं तो वे अपने सतगुरु की इज्जत भी करेंगे और अपने कल्याण को भी सुनिश्चित कर लेंगे।

सतगुरु कृपा

सन्त कहते सहज स्वभाव, सन्त का कहा मिथ्या नहीं जाव।
सन्त चरण गंगा की धारा, जहाँ पड़ें हो निस्तारा।।

"सन्तों की मौज व वचनों को हम संसारी, अज्ञानी जीव समझ नहीं सकते हैं। सन्त तीनों लोकों व तीनों कालों के ज्ञाता होते हैं। सन्तों को प्रत्येक जीव के बारे में पता होता है कि इस जीव की संसारी यात्रा तथा कर्म कितने शेष हैं। मैं इससे सम्बन्धित एक सच्ची घटित घटना आपके सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ।

मैं कई दिनों से हुजूर महाराज कंवर सिंह जी से अपने घर पर डी.सी. कालोनी, भिवानी में चरण कमल रखकर घर को पवित्र करवाने की अरदास कर रहा था।

आखिर वह शुभ दिन आ गया। हुजूर महाराज जी 29 दिसम्बर को प्रातः आठ बजे चरण कमल रखने पहुँच गये। वहाँ पर फतेहसिंह सहित कई सत्संगी मौजूद थे। आप सभी को पता ही है कि हमारे पुराने सत्संगियों में फतेह तथा छोटू (ग्राम सूप कासनी) की शब्द गाने वालों की प्रसिद्ध जोड़ी रही है। इन दोनों ने लगभग 36 साल से बड़े महाराज जी से नाम लिया हुआ था। फतेह उस अवसर पर पूरी रात्रि शब्द गाता रहा उसने बताया कि वद्ध होने के कारण तन थक गया, लेकिन मन करता है कि दिन रात शब्द गाता रहूँ। आदरवश मैंने हुजूर महाराज जी को दूध पीने को दिया। उन्होंने स्वयं नहीं पिया अपितु फतेहसिंह सहित हम सभी को कटोरियों व गिलासों में अपने कर कमलों से डाल डालकर पीने को दे दिया। उसी समय फतेह सिंह ने हाथ जोड़ कर हुजूर महाराज जी से अरदास की कि अब मैं वद्ध हो चुका

हूँ। अब आप मेरे शेष सारे संसारी कर्म काट दो। हुजूर महाराज जी ने उन पर दिव्य दष्टि डालते हुए कहा-जाओ, फतेह तेरे सारे कर्म कट चुके हैं। हम अज्ञानी जीव कुल मालिक की मौज को नहीं समझते कि जीवों के कर्म वे कैसे काटते हैं। दस दिन भी नहीं बीते कि फतेह भगत दिनांक 6.01.2004 को अपनी संसारी यात्रा पूर्ण करके राधास्वामी नाम की उस गाड़ी में बैठ गया जो अमरपुर जा रही है और स्वयं हुजूर महाराज जी जिसको चला रहे हैं।

इससे एक मास पूर्व जब मैं फतेह सिंह से डोहकी गाँव में जगमोहन के घर 1.12.2003 को पहली बार मिला तो उसने बड़े महाराज जी की मौज के विषय में मुझे विस्तार से बताया। तब मैंने जिज्ञासावश उससे यह पूछ लिया कि आप पुराने सत्संगी हो। इसलिए हाल हुजूर महाराज के विषय में भी कुछ जरूर बताओ। उसने बताया कि हाल हुजूर महाराज जी पूर्ण सन्त हैं। मैंने फिर उससे पूछा कि आपको कैसे पता है? तो उसने मुझे यह बात बताई।

"जब हाल हुजूर महाराज जी गद्दीनशीन हुए तो दो चार रोज बाद मुझे एक स्वप्न आया कि जैसे मैं और छोटू एक बहुत बड़े रेलवे स्टेशन पर खड़े हैं। वहाँ बड़ी भारी भीड़ है। धक्कामुक्की होने के कारण हमें टिकट भी नहीं मिली। हम दोनों जाकर स्टेशन पर खड़े हो गए। थोड़ी देर बाद एक लम्बी गाड़ी आई, जिसके कई डिब्बे थे। वह आकर स्टेशन पर रुक गई। हमने देखा कि उस गाड़ी को महाराज कंवर जी चला रहे हैं। उसका कोई डिब्बा नहीं खुला। केवल एक डिब्बा खुला। उसमें से एक आदमी निकला और कहा-केवल छोटू और फतेह दोनों इस गाड़ी में चढ़ जाओ। हम दोनों उस गाड़ी में चढ़ गये। वह सत्संगियों की गाड़ी थी उसमें हुजूर महाराज जी की माता जी भी बैठी थी। जब गाड़ी चल पड़ी तो मैंने हुजूर महाराज की माता जी से यह

पूछ लिया कि पहले तो इन्होंने (हाल हुजूर महाराज जी) ने पढ़ाई की, फिर बालक पढ़ाये, फिर इन्होंने यह गाड़ी (ट्रेन) चलानी कब सीखी? तब माता जी ने मुझे कहा-इस बात का तो मन्ने भी कोनी पता, कब चलानी सीखी? यो तो पीछे से सीख के आया सै। इसके बाद मेरी आँखें खुल गई। तब फतेह ने मुझे बताया कि सन्त इस संसार में आकर न ही कुछ सीखते हैं और न बनते हैं। यह तो धुर दरगाह से आते हैं। इसलिए मैं इनको पूर्ण सन्त कहता हूँ।

मुझे पता नहीं उस गाड़ी में कब बैठूँगा? हाल हुजूर महाराज जी ने फतेह भगत को दूध पिलाकर उस गाड़ी में चढ़ा लिया, जो कि अमरपुर जा रही है।

आप सभी को राधास्वामी ।

प्रो. जयसिंह मलिक
46-बी., डी.सी., कालोनी, भिवानी
फोन नं.-01664 – 252532

नोट :- कार्यालय में प्राप्त होने वाली सतगुरु कपा की घटनाओं को पत्रिका में ज्यूँ का त्यूँ प्रकाशित किया जाता है। कार्यालय इनमें केवल भाषा की अशुद्धियाँ ही दूर करता है। बहुत सी घटनाएँ केवल इसीलिए प्रकाशित नहीं हो पाती हैं, क्योंकि उनमें महत्त्वपूर्ण घटनाओं की तारीख नहीं दी होती हैं जिस कारण स्पष्ट नहीं हो पाती हैं या ठीक ढंग से सत्संगी अपने भाव प्रकट नहीं कर पाते हैं। अतः संगत से प्रार्थना है कि ये घटनाएँ अगर स्वयं अच्छी प्रकार न लिख सकें तो किसी से सहायता लेकर लिखी जाएँ और समय, दिन व तारीख आदि अवश्य दिये जाएँ। यदि घर पर फोन की सुविधा उपलब्ध है तो फोन नं. भी लिख दें, ताकि इन घटनाओं की छोटी-मोटी कमियों को व्यक्तिगत सम्पर्क करके दूर करने का प्रयत्न भी किया जा सके।

।। राधास्वामी।।

राधास्वामी सत्संग दिनोद-भिवानी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूचि

क्र.	पुस्तक	लेखक
1	अरमान सागर	
2	अनुभव प्रकाश	परम सन्त हुजूर कंवर सिंह जी
3	दस अवतारों की कथा	महर्षि शिवव्रतलाल जी
4	संकट मोचन रामायण	सन्त मास्टर राम सिंह जी अरमान
5	सतगुरु प्रेम	मा. कंवर सिंह जी महाराज
6	राधास्वामी योग भाग 1-6	महर्षि शिवव्रतलाल जी
7	कबीर बीजक भाग 1-3	महर्षि शिवव्रतलाल जी
8	नानक योग भाग 1-3	महर्षि शिवव्रतलाल जी
9	पांच नाम की व्याख्या	पं. फकीर चन्द जी
10	राधास्वामी निजनाम सदा की मुक्ति	मा. कंवर
11	नित नेम गुटका	सचिव
12	चाचा साहिब की डायरी	चाचा साधुराम
13	जूई से जहान्	मा. कंवर जी
14	अद्भुत उपासना योग भाग 1-2	महर्षि जी
15	सप्तऋषि ततान्त	महर्षि शिवव्रत लाल जी
16	सतगुरु महिमा	परम सन्त ताराचन्द जी
17	राधास्वामी मत प्रकाश	महर्षि शिवव्रतलाल जी
18	पंथ संदेश	महर्षि शिवव्रतलाल जी

19	कर्म रहस्य	महर्षि शिवव्रतलाल जी
20	व्यवहार ज्ञान प्रकाश	महर्षि शिवव्रतलाल जी
21	सहज भक्ति	महर्षि शिवव्रतलाल जी
22	कबीर परिचय आद्यज्ञान	
23	कबीर योग भाग-1	महर्षि शिवव्रतलाल जी
24	कबीर योग भाग-2	महर्षि शिवव्रतलाल जी
25	कबीर योग भाग-3	महर्षि शिवव्रतलाल जी
26	कबीर योग भाग-4	महर्षि शिवव्रतलाल जी
27	कबीर योग भाग-5	महर्षि शिवव्रतलाल जी
28	कबीर योग भाग-6	महर्षि शिवव्रतलाल जी
29	कबीर योग भाग 7-13	महर्षि शिवव्रतलाल जी
30	शरणागति योग	महर्षि शिवव्रतलालजी/सन्त फकीरचन्द
31	अनमोल विचार	महर्षि शिवव्रतलालजी/सन्त फकीरचन्द
32	विचारांजलि	महर्षि शिवव्रतलालजी/सन्त फकीरचन्द
33	वसीयत नामा	परम सन्त मा. रामसिंह जी अरमान
34	सफलता के साधन	
35	प्रवचन संग्रह	मा. कंवर जी महाराज
36	सारवचन वार्तिक	स्वामी जी महाराज
37	सार वचन छन्छ-बन्द (पहला + दूसरा भाग)	स्वामी जी महाराज
38	अनमोल चरित्र	राधास्वामी सत्संग (दिनोद), भिवानी
39	अरमान सागर भाग-२	सन्त रामसिंह जी अरमान
40	सत्संग के आठ वचन	महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज